DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor,
Deptt. of Sanskrit,
S.R.A.P. College, Bara
Chakia, Emt Champaran

B.A. (Hons.), Part – II
Subject – ~~Sanskrit~~ Sanskrit
paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का अन्वय सहित हिन्दी अनुवाद

श्लोक सं० – 25

मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभवः ।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् ॥

अन्वयः

मानुषीषु अस्य रूपस्य संभवः कथं वा स्यात्,
प्रभातरलं ज्योतिः वसुधा तलात् न उदेति ।

अनुवाद

ऐसे रूप का उद्भव मनुष्य स्त्रियों में कहाँ संभव हो सकता है? क्या कभी प्रभापुञ्ज से चमकती हुई ज्योति भी भला पृथ्वी तल से पैदा हुआ करती है?

— ० —

Scanned by TapScanner